ಮೈಸೂರು ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾರಾಜರವರ
ಸರಸ್ವತೀಪ್ರಸಾದಪಾಠಶಾಲಾ.

ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾರಾಜ ಸಂಸ್ಕೃತ ಮಹಾ
ಪಾಠಶಾಲಾ, ಮೈಸೂರು.

೧. ಪುಸ್ತಕದ ಹೆಸರು

೨. ಗ್ರಂಥಕರ್ತ ಯಾ ಪ್ರಕಾಶಕರು

೩. ಆಕ್ಸೆಸ್ಷನ್ ನಂ.

೪. ಕ್ಯಾಟಲಾಗ್ ನಂ.

೫. ಖರೀದಿ

೬. ತಾರೀಖು

2234

WD 1179—GBPM—6,000—17·1·45

ತಾರೀಖು .....

22257
(1207) 670

MAHARAJA'S SANSKRIT COLLEGE LIBRARY
MYSORE.
Accession No..... Date.....
Class No..... Page.....

अजीर्णामंजरी

पण्डित

दत्तराम माथुर कृत ॥

हस्बफ़रमायस लाला देवीदासजी

खत्रीके

लाला बलदेवप्रसाद साहबरकर्

नवीसावक

के

मकान में काशीसमाननिजशिला

यंत्रमें॥

लाला हरप्रसाद के प्रबंधसेछपी

सम्वत्

१९४०

सन्

१८८३ई०

MAHARAJA'S SANSKRIT COLLEGE LIBRARY,
MYSORE
Accession No.....
Class No.....

श्री

श्रीशम्बन्दे॥

श्रीनिकुञ्ज विहारिणे नमः

धन्वंतरिं धृतकरांमृतपूर्णकुंभं
पीतांबरं सकल सिद्धसुरेन्द्रवंद्यं
वंदेरविन्दनयनंमणिमास्यमायु
र्वेदप्रवर्त्तकमनुस्मृतिरोग
नाशम्१

अर्थ- धराहै अमृत कापूर्णकलशहाथमेंजिन्नेपी
ताम्बरके धारण करनेवाले- सबसिद्ध और सुरेन्द्रकरकें
वंद्यकमलसेनेत्र मणिकीमालाके धारण करनेवाले आयुर्वेद
वैद्यविद्याके प्रगटकरनेवाले- तथास्मरमात्रसेंहीरोगोंको
नाशकरै ऐसे श्रीधन्वंतर भगवान्कोहमग्रंथकी आदिमें
नमस्कारकरतेहैं

राधिकारमणंनत्वाश्रीवृन्दावन
चारिणं दत्तरामःप्रकुरुतेदिव्या
र्थाजीर्णमंजरीम्॥२॥

अर्थ- श्रीवृन्दावनविहारी राधिकारमण कोनमस्कार
र दत्तराम श्रेष्ठहै प्रयोजन जिसका ऐसीइसअजीर्णमंज
री को रचनाकरैहैं २

यतस्सर्वेषुरोगेषुत्वजीर्णंकारणं

स्मृतं ततस्तस्यनिदानंचकथ्यते
पूर्वसंमितम्॥२॥

अर्थ- सबरोगों का कारण अजीर्ण रोगको कहतेहैं क्यों
कि जबअन्न का परिपाक यथार्थनहीं होयतबतकअनेक
ज्वरादि दुष्टरोग इसमनुष्य को संतापित करतेहैं इसीहेतु
सें अजीर्णरोगका पूर्वाचार्योंके संमत निदानको कहतेहैं
अजीर्ण रोग होने का कारण मंदाग्निहै मंदाग्निके होने से
ही अजीर्णरोग होयहै॥३॥

अजीर्णरोगकीउत्पत्ति

अत्यंबुपानाद्विषमाशनाच्चसं
धारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च का
लेपिसात्म्यंलघुचापिभुक्तमन्नं
नपाकंभजतेनरस्य ॥४॥

अर्थ- बहुत जल पानेसें कुसमय भोजनकरनेसें मल
मूत्र आदि वेगके रोकनेसें दिनमें सोनेसें रात्रिमें जागने
से अथवा भोजन के समय निरंतर लघु भोजनकरनेसें
ऐसे मनुष्य के अच्छीरीति सें अन्न नहीं पचैहै ॥४॥

ईर्ष्याभयक्रोधपरिप्लुतेनलुब्धे
नसुगर्दैन्यनिपीडितेन प्रद्वेष
युक्तेनचसेव्यमानमन्नंनसम्प्य
क् परिपाकमेति ॥५॥

अर्थ-ईर्ष्या-भय-क्रोध-इन्के अष्ट प्रहर करनेसें लोभशोक दीनता इनके करनेसें तथा अष्टप्रहर वैरके राखनेसें मनुष्य के भोजनकरा अन्नअच्छी रीतिसें नहीं पचे हैं ॥५॥

भुक्तान्नं पाचिनेवन्हिनोदरजेन
तत् तस्योपरि पुनर्भुक्तमजीर्णं
तंविदुर्बुधाः॥६॥

अर्थ-मंदाग्नि सें प्रथम भोजनकरा अन्नतोपरि पाक भयान होय उसके ऊपरके भोजनकरै उसे अजीर्णरोग कहतेहैं ॥६॥

अजीर्णके भेद

आमं विदग्धं विष्टब्धं कफ पित्ता
निलै स्त्रिभिः अजीर्णके चिदि-
च्छतिचतुर्थं रस शेषतः ॥७॥
अजीर्णं पंचमंके चिन्निर्दोषंदि
न पाकिच वदंति षष्ठंचाजीर्णं
प्राकृतं प्रति वासरम् ॥८॥

अर्थ-कफ पित्त और वायु ये तीन दोषोंसे क्रमपूर्वक आमविदग्ध और विष्टब्ध ऐसें तीनप्रकारका अजीर्णहोय है और कोई आचारी कहतेहैं कि आहार रसके शेषरहने से चतुर्थ अजीर्ण होयहै और रात्रिदिनमें जो आहार पचे उसको निर्दोष पांचवां अजीर्णकहतेहैं और जो नित्यहै उसको प्राकृत अजीर्ण छठवां कहतेहैं ऐसें अजी

र्णरोग छः प्रकारकाहै परंतु मनुष्य अजीर्ण रोग चार ही प्रकार काहैं सोग्रंथान्तर में लिखा भीहै + यथा +

अजीर्णा प्रभवा रोगास्तदजीर्णंच
तुर्विधम् आमं विदग्धंविष्टब्धं
रसा जीर्णं चतुर्थकम् ॥९॥

अर्थ-मनुष्यों के अजीर्ण होनेसे रोगप्रगट होतेहैं सो अजीर्णरोग चार प्रकार के हैं आमा विदग्ध विष्टब्ध रसाजीर्ण ऐसें चारप्रकारकेहैं ॥९॥

आमाद्दिक अजीर्णके ल०

तत्रामे गुरुतोत्क्लेदः शोथोगंडा-
क्षिकूटगः उद्गारश्च यथाभुक्तम
विदग्धः प्रवर्त्तते ॥१०॥

अर्थ-तिनमें आमाजीर्णमें देह का जड़होना क्लेद गाल और नेत्र इनमें सूजन डकार का आना और जैसा अन्न खायतैसाही दस्तमार्गहोकर उकले उसे आमाजीर्णकहतेहैं

विदग्धाजीर्णके ल०

विदग्धे भ्रमतृण्मूर्च्छाः पित्ताच्च
विविधारुजः उद्गारश्च सधूमा
म्लः स्वेदो दाहश्च जायते ॥११॥

अर्थ-विदग्ध अजीर्णमें भ्रम प्यास और मूर्छा येहोते हैं और पित्तसें अनेक प्रकार के रोग प्रगट हो धूमखट्टी

डकार आवे पसीना आवे तथा दाह होय ॥११॥

विष्टब्धाजीर्णके लक्षण

विष्टब्धेमूलमाध्मानंविविधावा
तवेदनाः मलवातप्रवृत्तिश्च
स्तंभो मोहोंऽगपीडनम् ॥१२॥

अर्थ विष्टब्ध अजीर्णमें मूल पेटकाफूलना अनेक वातसे पीडा मलऔरअधोवायु की अप्रवृत्ति कहियेवेद होजाना देहकाजकडजाना मोहऔरअंगोंमेंपीडायेलक्षणहोतेहैं१२

रसाजीर्णके लक्षण ॥

रसशेषेऽरुचिर्द्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवे

अर्थ रसशेष अजीर्णमें अन्नमें अरुचि हृदयमेंअशुद्धता और शरीर काजड़ होजानायहलक्षणहोतेहैं

चारोंअजीर्णमेंसामान्य उपचार

आमेचोष्णोदकंपेयं दग्धेचोदर
स्वेदनम् विष्टब्धेरेचनंचैवशय
नं रस शेषके ॥१३॥

अर्थ आमाजीर्ण में तप्तजलपीवे विदग्धाजीर्णमें पेट को स्वेदनकरे विष्टब्धाजीर्णमें दस्तलेना और रसशेष अजीर्णमें शयनकरनाचाहिये

॥१३॥

अजीर्णपाचन होनेके दिवस

घृताजीर्णेदिनाःपंच तैलेद्वाद
शकस्तथा तिथिसंख्यापयस्यु
क्तादध्निवा विंशति स्मृता॥१४॥

अर्थ घृतका अजीर्णपांचदिन पचताहै तेलकाबारहदिन में दूधका पंद्रह दिनमें दहीबीस दिनमें पचताहै ॥१४॥

आमान्नंसप्तरात्रेण दधिशोडष
भिस्तथा क्षीरंविंशतिभिर्तैयं मां
सं मासेन पच्यते॥१५॥

अर्थ आमाजीर्ण सातरातमें दही सोलह दिनमें दूधबीस दिनमें और मांस एकमहीनामें पचताहै ॥१५॥

उष्णोदकंघृताजीर्णे तैलाजीर्णे
चकांजिकं गोधूमें कर्कटिश्रेष्ठा
कदल्याम्रफलेघृतम् ॥१६॥

अर्थ घृतके अजीर्ण में गरमजलपीना हितहै तेलकेअजीर्णमें कांजीपीवे गेहूंके अजीर्ण में ककड़ीखाय और केला तथा आमके अजीर्ण में घृतपानकरै ॥१६॥

नाल्लीकेरफलेषुतंदुलजलंक्षीरं
रसालेहितं जंबीरास्यरसोघृतेस
मुचितःसर्पिस्तुमोचाफले गोधू

मेषुचकर्कटी हितमा मांसाद
ने कांजिकं नारंगे गुडभक्षणंच
कथितं भिंडालुके कोद्रवम् १७॥

अर्थ- नारियलगिरी खानेसें प्रगट अजीर्णमें सुद्ध चावलों का धोयाहुआजल पान करना हितहै- आमकेचूसनेसें प्रगटअजीर्णमें दूधपानकरै- घृतकेअजीर्णमें जंभीरीकारसपीवै- केलाकी फलीके अजीर्णमें घृतपानकरै- गेहूकेअजीर्णमें ककडीपथ्यहै- मांसभक्षणाजीर्णमें कांजीकापानकरै- नारंगीकेअजीर्णमें गुड़खाना चाहिये- आलूकेअजीर्णमें कोदोअन्नभक्षणकरनाचाहिये॥१७॥

पिष्टान्नेसलिलंप्रियालफलजेप-
थ्याहितामासजे खंडंक्षीरभवेतुल
क्षुचितं कोष्मांबुकालिंगजे म
त्स्यंचूतफलंत्वजीर्णशमनंमध्वंबु
पानात्पयेतैलंपुष्करजेकटुपशम
नंशेषांस्तुबुध्याजयेत् ॥१८॥

अर्थ- पिष्टान्न अर्थात् रोटी पूरीके अजीर्णमें जलकापीनाहितहै- खिरनीकेअजीर्णमें हरड़ खाना चाहिये- उदरके अजीर्णमें खांडहितहै- दूधके अजीर्णमें छांछपीना हितहै- तरबूजके अजीर्णमें तत्ताजलपीना चाहिये- मछलीके अजीर्णमें आमकोचूसनाचाहिये- मद्यकेअजीर्णमें सहतयुक्तजलपान करनाचाहिये- कमलबीजखाने के अजीर्णमें सरसोंकातेलपानकरनाचाहिये- और शेषअजीर्णोंकोवैद्यअपनीबुद्धिसे दूरकरै॥१८

पनसेकदले कदले चघृतंघृत
पाकविधावपिजंभरसः तदपद
वशांति करं लवणं लवणे पि
च तंदुलवारि परम् ॥१९॥

अर्थ- कटहर के अजीर्णमें केलाकीगहरखानाअच्छाहै केलाकी गहर के अजीर्णमें घीखाना घृतकेअजीर्णमें जंभीरीकारस जंभीरीरसाजीर्णमें नोंन नोनकेअजीर्णमें सुद्ध चांवलोंका धोवनकाजलपीनाचाहिये॥१९॥

नारिकेलिफलतालमूलयोः पा
चनंयदुहतंदुलंविदुः तेवदं
तिमुनयोपि तंदुलानक्षीरवारि
परिपाचयत्यपि ॥२०॥

अर्थ- नारियलकी गिरी खानेके अजीर्णमें तथातालफल मूली- इनके अजीर्णमें चांवलोंका धोवनपीना हितहै- और चावलोंकेअजीर्णमें दूधऔरपानीपीनाअच्छाहै

दाडिमामलकतालतिंदुकीवी-
जपूरलवलीफलानिच वाकु-
लंफलमतीवपाचयेत्पाकमेति

वकुलं खमूलतः ॥२१॥

अर्थ- अनार- आमले- तालफल- तिदुकी विजोरा इमली इन्के अजीर्णमें मौलसरीके फलखाने चाहिये- मौलसरीके अजीर्णमें मौलसरीके जड़को खानेसे पाचन होयहै॥२१॥

माधूकमाम्रं नृपादनानांपरू
षकर्जूरकपित्थकानां पाकायपे
यंपिचुमंदबीजंसिद्धार्थकोहंतिच
पीजपूरम् ॥२२॥

अर्थ- महुआ- बेलफल- खिरनी- खजूर- फालसे- इनके अजीर्णमें- नीमके बीज को जलमें पिसके पीना चाहिये और बिजोरे के अजीर्णको सरसों नाश करे॥२२॥

आम्रातकोदुंबरिपिप्पलीनांफ
लानिचक्षक्षबदादिकानां वि
प्वौषधंपर्युषितोदकेनसौवच
लेताम्रफलस्यपाकम् ॥२३॥

अर्थ- गलर- पीपल- आम- पाकर- वड- इन्के फल खाने से अजीर्णमें बासेपानी में सोंठ पीसके पीना योग्यहै और आमका अजीर्णसेंधालोणसे होताहै॥२३॥

मृणालखर्जूरकहारहराकसेरुशृंगा
टकशर्करागांपयाविपोकायचभद्र
मुस्तंतथारसोनेषुचभद्रमुस्तम् ॥२४॥

अर्थ- कमलमूल अर्थात् भसेंड़ा- खजूर- मुनका- कसेरू सिंघाड़े खांड़ इनसबका अजीर्ण नागरमोथा नाशक है- और लहसनका अजीर्ण दूधपीने नाश होय॥२४॥

गोधूममाषौहरिमंथमुद्गौयवांस
तीनोकितवोनिहंति यस्मात्तु
गीफलमेतिपाकंक्षणोनसोयंस्न
वणानुभावः ॥२५॥

अर्थ- गेहूं उड़द चना मूंग जो मटर इनका अजीर्ण धतूरेके रससैं नाश हो ताहै और बिजोरेका अजीर्ण सेंधे नोनसे नाश होताहै॥२५॥

सौवीरंफलमुष्णवारिहन्यात्प्रा
चीनामलकंचराजिकैका खा
र्जूरंचपरूषकंपियालंतैलंता
लफलेपचेन्मरीचम् ॥२६॥

अर्थ- बेरके अजीर्णको उष्णजल नाश करे प्राचीनआमले के अजीर्णको राई दूर करे- छुहारा- और फालसेके अजीर्णको तथा खिरनीके अजीर्णको तेल खाना हित है तालफलके अजीर्णको मिर्च दूर करे॥२६॥

नागरंहरतिबिल्वजांवबंपाच
येन्मधुरिकाकपित्थजं सर्वमेव
सकलामयहंत्रीपीतयेगिजन-

नीगदितासा ॥२७॥

अर्थ- वेलफल जामन के अजीर्णको सोंठ पचातीहै वे अके अजीर्णको लोंप पाचन करै यहविशेष करकेस र्वव्याधीनाशकरै अग्निदीप्तकरै ऐसीकहीहै २७

पनसामलकीफलपक्वयेभजत
सर्जतरोश्चबीजकं सकलमप्यु
दितंनुदिनंफलंप्रपचतिपुस्तव
कपिकच्छुजम् ॥२८॥

अर्थ- कटहर आमले इन्के अजीर्णमें सर्जतरुकेबीज भक्षण करै और किसीफल का अजीर्णहो उसमेकोंछ कीबीज खानाहित है ॥२८॥

पिशितपनशमोःस्यादाम्रबीजे
नपाकः क्षारमहिषयोर्विस्त्रीर
यो सैंधवेनचिपिटपरिणतिःस्या
त्पिप्पलीदीप्यकाभ्यामपहरति
तुषांबुहृद्दलानांमजीर्णं ॥२९॥

अर्थ- मांस और कटहरका अजीर्ण आमकी गुठलीसें नाशहोय उडद तिल चामल इन्के मिलाने क्षार अर्थात् खिचडीसें होतीहै और भैंसकादूध इनदानों कापरिपाक सेंधेनोंनसें होतहै और चिरवा काअजीर्ण पीपरऔरअ जमायनसें नाशहोताहै तथादोस्तकाअजीर्ण जैसैंमूंगउर

द आदिका अजीर्ण कांजी सें नष्ट होता है ॥२९॥

कर्पूरपूंगीफलनागवल्लीकाश्मी
रजातीफलजातिकोशकस्तूरि
काशेलुकनालिकेरफलंपचत्या
शुसमुद्फेन ॥३०॥

अर्थ- कपूर सुपारी तांबूल केशर जायफल जावित्री क स्तूरी बहेडा नारियल इन्का अजीर्णसमुद्फेनपचाताहै३०

श्यामाकनीवारकुलत्थषष्टीनिष्पा
वकंगूर्दधिमंडकस्तु चिंचाकुल
त्थोतिलतैलयोगोजटाद्नाद
स्यनिहंत्यप्यामम् ॥३१॥

अर्थ- सामखिया तिन्नी कुलथी साठीचांमल वनमूंग कांगनी इन्का अजीर्ण दहीके मठासें नाशहोताहै इम ली कुलथी इन्काअजीर्ण तिलके तेलसें दूरहो आम का अजीर्ण चोंलाईकीजड़सेनष्टहोयहै ॥३१॥

कसेरुशृंगाटमृणालमृद्वीखर्जूर
खंडाल्यपिनागरेण पलासभस्मा
युतथाराजोवारसोनिहंत्याद्रुमि
क्षुजातं ॥३२॥

अर्थ- कसेरु सिंघाड़े कमलकाकंद दाख खजूर खांड इन्काअजीर्ण सोंठसे नाशहोताहै पोंड़ा गंडाकाअजी

र्णी ढाक भस्मको पानीमें मिलाकर पीनेसैं शांति होताहै ३२

निम्बूफलेनाप्यथवोषणेनकोष्णां
बुनावाघृतमेतिपाकम् तिलादि
तैलान्यधिकांजिकेन सर्जस्समज्जा
पनसामलक्यैः॥३३

अर्थ- घृत का अजीर्णी नींबू अथवा मिरच अथवा गर
मशीतलजलसैं पचैहै तिलसैं आदिलैं सब तेलोंका अजीर्णी
कांजीसे पचताहै कटहर और आमलेका अजीर्णी संखुआसेपचै
है

किमत्र चित्रं बहुमांस मत्स्यभोजी
सुखीस्यात्परिपीतसक्तः इत्यद्भु
तं केवलवह्निपक्वमांसेनमत्स्यः
परिपाकमेति ३४॥

अर्थ- बहुत मांस और बहुत मच्छी खाने वाला मनुष्य
मद्यपान करनेसैं सुखीहोय यहआश्चर्य नहींहै परंतुकेव
ल आंच मेंपका मांस अर्थात् कबाब सैं मच्छलीका अ-
जीर्णी पचताहै यहबड़ाआश्चर्यहै॥३४॥

कपोतपारावतनीलकंठकपिं
जलानांपिशितानिजग्ध्वा का
सस्यमूलंपरिपीयपिष्टसुखीभ-
वेत्तोबहुशोऽनुभूतम्॥३५॥

अर्थ- कबूतर और परकाकबूतर मोर सुपेद तीतर इन्के

मांस खानेसैं प्रगट अजीर्णी मेंकांसकीजडकोजलमेंपीसकरपी
नेसैं दूरहोताहै यहप्रयोगहमारा अनुभूतहै अर्थात् अजमायाहै

व्योषैरसास्नासुरभीपयस्तुमंडेन
कोष्णेन विपाकमेति शंखस्यचू
र्णो नहयादिनारीपयोदधिक्षिप्त
मुपैतिपाकं ३६

अर्थ- सिखरिणीका अजीर्णी चिकुटा (सोंठ मिरच पीपर)
सैं पचताहै और गौके दूधका अजीर्णी चौदहगुणोजलयुक्त
मंड शीतल और गरमसैं पचताहै भातकेपानीको मंड कहते
हैं तथा खुरवाले घोडासैं आदिलैं सबपशूंकादूध और दही
का अजीर्णी शंख चूर्णसैं पचताहै॥३६॥

वटोवेसवाराह्लवंगेनफेनीशमं
पर्पटः शिग्रुबीजेनयाति करा
मूलतोलडुकापूपशाहाविपा-
कोभवेच्छष्कुलीमंडयोश्च॥३७॥

अर्थ- उरद मूंगकी पकोडी घृतमें अथवा तेलमेंबनीहो-
य सोमद्यविशेषसैं परिपाकहोय फेनी लौंग से पचै· पाप
ड सहजनेकेबीजसैं पचै लड्डु पुआ छाछ आदिसैंबनीकढी
आदिसमस्त का अजीर्णी और पूरी मांडाइत्यादिक का अ-
जीर्णी पीपरमूल के खानेसैं नाशहोताहै ॥ ३७॥

अविद्धोधाशस्त्रकीचित्तलाद्या

ग्राविक्षीरात् कोलकूर्मीदयोपि
जीर्यंत्येवं पायसोमुद्गयूषात्साशु
दाद्यार नाले सुखाय ॥३८॥

अर्थ- पंचनखवाले जानवरोंका मांसजैसे गोह सेह कछुआ और रोज सूकर कछुआ मछलीसैं आदिलै इनकेमांसका अजीर्णी भेडकेदूधसैं पचताहै और खीर मूंगका यूषपानेसे पचती है और सिरकेका अजीर्णी समुद्रनोनखानेसे दूरहो ताहै ॥३८॥

तप्तंतप्तंहेमवातारभरनौ वारंवारं
क्षिप्तमंभस्सुतच्च पीत्वावश्यंदी-
र्घकालोपपन्नमंभोजीर्णीशीघ्रमे
वं जहाति॥३९॥

अर्थ- सुवर्णी अथवा चांदीको वारंवार तपाकर जलमें बुझा वेउसजलके पीनेसैं वहकालकाजलकृत अजीर्णी शांतिहोई

पालंकिकाके चुकाकारवल्लीवार्ता
कवंशांकुरमूलकानां उपोदिका
लावुपटोलकानां सिद्धार्थकोमे
घर वस्य पक्वैः ॥ ४०॥

अर्थ- पालक छचाक जिस्को बालक स्याकी छत्री कहते है करेला वेगन बांसके कोंपल मूली पोईका साग मीठीतुंबी परवल चौराई इनसब का अजीर्णी सरसोंके साग खाने सैं ॥ नष्टहोय॥४०॥

सुंठीसतीनस्सचनागरेगजंबीरयोः
कोद्रवकोनिहंता जरासिरागैरकच
न्दनाभ्यांमभ्येतिपाकंवहुशोसुभूतम्

अर्थ- मटरका अजीर्णी सोंठसें नष्टहोय जंभीरीनीबूनारंगी इनदोनों का अजीर्णी कोदोंअन्नसैं पचै ये हमा निश्चे यकराभयाहै॥ ४१॥

पटोलवशांकुरकारवल्लीफलाम्ल-
लावूनिवहनिजग्ध्वा क्षारोदकंब्रह्म
तरोर्निपीयभोक्तुंपुनर्वांछतितावदेव

अर्थ- परवल बांसकेकोंपल करेला मीठीतुंबी इनकेअजीर्णी मेंपलास(ढाक)केक्षारकोजलमेंपीनेसैंतत्कालपरिपाकहोय और उसी वक्त उत नाहीं भोजनकरनेकी इच्छाहोय ॥४२॥

विपच्यतेशररागोगुडेनतथालुकंतं
दुलतोयपानात् जंबीरनीरेणनिशार
सानंमुस्तेनचूर्णेपरिपाकमेति॥४३॥

अर्थ- जिमीकंदका अजीर्णी गुडसैंपचै आलूका अजीर्णी मलकेधोवनसैंपचै हलदीका अजीर्णी जंभीरीकेरससैंपचै लहसनका अजीर्णी मोथाकेचूर्णसैं परिपाकहोय ॥४३॥

चंचूकसिद्धार्थकवास्तुकानां गा
यत्रिसारक्वथितेनपाकः शाका-
निसर्वाण्युपयांतिपाकंक्षारेण

सद्यस्तिलनालजेन ॥४४॥

अर्थ- चूका सरसों वा मुझा इन्के खानेसैं प्रगट अजीर्णखे रसार के काढेसैं परिपाक होय और सब साग मांच अजीर्णी तिल के खारसैं नाशहोय ॥४३॥

स्नेहाजीर्णीरोगिणांमुद्गचूर्णोज्वा
लाप्रक्तोहंतिवैरोचिकानां माषा
रढानिम्बिम्बमूलेनपाकंचिंचामु
चत्यम्लतां चूर्णयोगात् ॥४४॥

अर्थ- स्नेह कहिये तेल घृत वसा मुझा इन्का अजीर्णीमूंगके चूर्णसे पचताहै विरेचकद्रव्य खानेका अजीर्णी सिरकासैं पचताहै उरदका अजीर्णी नीबूसैं पचे इम्लीकोपूहर के खारमें मिलानेसैं खटाईका नाशहोय और पचे ॥४४॥

उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्णमम्ले
नचक्षारगणोगुणाय स्नेहेनती
क्ष्णोवमनातियोगेसितांहितास्या
दितिकाश्यपोक्ति ॥४५॥

अर्थ- सरदीके रोग गरमऔषधसैं नष्टहोय और गरमीके रोग सरदऔषधतैं नष्ट होय सबखारखट्टीवस्तुसैं गुणकारक होय तीखीमिरचआदिवस्तु घृततेलआदिसैं गुणकारै और वमनकारक औषधका औगुन मिश्रीसे शांति होय ॥ ४५॥

ताम्बूलमध्यस्थितचूर्णकेनसन्द

ह्यतेयस्य मुखेनरस्यतैलेनवाके
नसुलकांजिकेन मुखायगंडूषम
सौ विदध्यात् ॥४६॥

अर्थ- जिसमनुष्य का मुख पान के बीड़ाखानेसैं पजरनेलगै अर्थात् चूने कत्थेसैं फटे वहतेल अथवा सिरकासेकुल्लाकरै तौ आराम होय ॥४६॥

शीतोदकंनस्यजरोगहारिनारीप
यआंजनरुग्विनाशि रालोदकं
धूमगदेप्रशस्तंधात्रीविलेपोति
विरेचनोत्थे ॥४७॥

अर्थ- सूंघने के रोग शीतल जलसैं नष्टहोय और अंजनसैं प्रगटरोग स्त्रीके दूधसैं नष्ट होय धूम्रपान अर्थात् हुक्कापीने के रोग रालकेजलसैं नष्टहोय और अतिदस्तोंका रोग आमरे के लेपसैं नष्टहोय ॥४७॥

मृगस्यमांसंभ्रमजेनुकूलंप्रवात
सुप्तिःसुरतावसाने क्षारौषधाभ्यां
धवसाधितंतुछागांडभुक्तंसुरता
तिरेके ॥४८॥

अर्थ- डंड कसरतके करनेसैं प्रगटजोज्वरादिक सोमृगके मांस खाने सैं नष्टहोय स्त्रीसंगके पिछाडी हवादार स्थान में सोना अच्छाहै तथा स्त्रीसंग अधिक कराहोय उससैं प्रगट

रोगमें जवारवार· घीपर· सेंधानोन· इस्कोमिलाकर पकाहु
आ बकराका अंहकोश खाना हितहोय ॥४८॥

अवरा पूरराजेतिलतैलतः ॥
अवराणपूरराणमेवसुखंविदुः ॥
कवलजेषुगदेष्वथकारयेत् ॥
कवलमार्दकजद्रवजंसुनः॥४९॥

अर्थ· कानमें तैलादिक डारनेसैं प्रगटरोग योंरदूसरे तैल
डारनेसैं शांतिहोय और ग्रासअर्थात् गस्सारखाने के रोगफे
रअदरक रससुक्त ग्रासरखनेसैं नष्टहोय ॥४९॥

रवीरुचीनारुकयोःफलानिक्
ष्मांडकंचत्र पुसीफलंच निह
न्तिसद्योहिकरंजबीजं रसंतथा
वारुणिमेकमूलम् ॥५०॥

अर्थ· ककडी चेना आरुक जिस्को पहाडूलोग वीर
सेन कहते हैं पेठा खीरा इन्का अजीर्णी कंजाके बीज
के स्वरससैं अथवा वरना की जड़ यह येकही पूर्वोक्त
अजीर्णीका नाशकरैं ॥५०॥

स्त्रीकेशाम्बुनिपीतमाशुहन्यात्
प्राचीनामलकंसपाणिमदीम्·
शुंठीधान्यकवारिहंतिसद्य ॥
स्तास्तानामविकासजान्विकारान्

अर्थ· आमरा और करैंदा इन दोनोंका अजीर्णी स्त्रीके के
शधोवन जल के पीनेसैं शांति होय· और आम कारोगसों
ठ और धमियों के काटेसैं नष्टहोय ॥५१॥

मद्यपतिनहिमद्यंजातुचेत्पीतम
द्यः पिबति घृतसमेतो शर्करामे
वसद्यः अथघन मधुकेला कुष्ट
दार्वीलवालु प्रकटित कवलास्ये
मद्यगंधोऽपिनस्यात् ॥५२॥

अर्थ· जो मनुष्य दारू पीवै और उसके ऊपर मिश्री मिला
घृत पान करै तो मद्य अर्थात् दारूका अमल नहीं चढे और
नागरमोथा· मुलहटी· इलायची· कूठ· देवदारू· सुगंधवाली
इन्का चूर्ण मुखमें राखनेसैं मुखमें मद्यकी दुर्गंध नहीं आवे ॥

कूष्मांडकस्यस्वरसोगुडेनपीतोम
दंकोद्रवजंनिहंति पयोनिपी
तंसितया समेत मुत्पन्नमृत्युत्व
मपा करोति ॥५३॥

अर्थ· कोदो अन्न का मद गुड़ और पेठे के स्वरस पीने सैं
शांति होय और धातुक्षीणा कार्श्यादिक रोग दूध में मिश्री
मिलाय कर पीनेसैं दूर होता है ॥५३॥

घ्रात्वा शुकाक्षीं विपिनो पलेवासं
प्राश्यकिंचित्पटुशर्कराम्बाशीता

म्बु पीत्वा चुलकेनवापि प्रसत्य
पूगी फल मुज्झहा ति ॥५४॥

अर्थ- सुपारीका उन्माद शुकनेची अथवा सुर्वा के सूंघने सैं नाशहोय अथवा थोड़ी सी चीनी भक्षण करनेसैं अथ वा शीतल जल पीनेसैं नाशहोय सुपारीका उन्माद जब होताहै जब सुपारी कंठ में अटक जाती है ॥५४॥

एलार्द्र काम्भोधरचंदनानां चूर्णं
यथा पूर्व विवर्द्धितानां पचमे
वस्त्रे धृत माशुहंति सुरारसोना
दिज सुग्र गंधम् ॥५५॥

अर्थ- इलायची· अदरक· नागरमोथा· चंदनयह सबव स्तु क्रमसैं बढती लेय· अर्थात् इलायची ४ भाग· अदरक ३ भाग· मोथा २ भाग· चंदन १ भाग· इनसबको कूटकर मुख में धारणा करणे सैं मदिरा और लहसन इत्यादिक सर्व व स्तू की मुख दुर्गंध नाशहोय ॥५५॥

गुड मधु कांजिक तक्रविभागा :
स्युर्द्वि गुणास्तु यथोत्तरमेते त्रि·
गुणादि ना न्यथधान्ये शस्त स्यापि
न मे तद्विशंति हि शस्त्रम् ॥५६॥

अर्थ- गुड सहत कांजी· छाछ इनसब को क्रमसे द्वि गुणा तलेय जैसे गुड सैं दूना सहत सहतसैं दूनी कांजी कांजी सैं

दूनी छाछ इनसबको मिलाय एक पात्रमें भरकर धान की राशि में धरदे इसके शस्त्र कहते हैं ॥५६॥

शस्त्र मुक्त मपियद्बहुभेदहंतिसर्व·
मिदमामजरवेदं यन्मयागदितंमधु
शस्त्रं तद्विषग्भिरपपाचन मुक्तं ॥५७॥

अर्थ- वैद्योंने शस्त्र के अनेक भेद कहेहैं यह सबशस्त्र· आमके रोग नाशकहैं परंतु इस ग्रंथमें जो मधुशस्त्र कहा है इसको वैद्य पाचक कहतेहैं यहकाशीराजकासिद्धांतहै

सैंधवचिकटुधान्यजीरकैर्दीप्ति
मीरजनिरामठान्वितः पाचनो
वृजठराग्निदीपनो वेशवारउ·
दितोमनीषिभिः ॥५८॥

अर्थ- सैंधानोन· सोंठ· पीपर· मिरच· धनियां· जीरा· अनार दाना· हरदी· और हींग· इनसबको कूटकर एकघकरनेसैं वेशवार नामका मसाला बनताहै यहमसालापाचन और दीपनहै ऐसैं बुद्धमानवैद्यकहतेहैं ॥५८॥

विष्वौषधचपलोषणासैंधवधान्य
कहिंगुराजीभिः करकाजाजियुता·
भिर्गदितोमुनिभिरुवेसवारोयम् ॥५९॥

अर्थ- सोंठ· मिरच· पीपल· सैंधानोन· धनियां· हींग· राई· अनारदाना· अजमायन· इनको मिलानेसेभीवेशवारहोताहै

अनेककविवाक्यैस्तुसारमादाय
यत्नतः दत्तरामेणरचितासंक्षि
प्ताजीर्णी मंजरी ॥ ६०॥

अर्थ- अनेक कविओं के वाक्यों का सारले दत्तरामने संक्षेप
सें अजीर्णी मंजरी रचनाकरी॥६०॥

इति श्री माथुर वंशोद्भव पण्डि-
त कन्हैयालाल पाठक तत्सुत दत्त
रामरचित अजीर्णीमंजरी समाप्ता ६१

अब थोडी अजीर्णी नाशक औषध अपनी अनुभव-
करी मंदाग्नि पीडित मनुष्यों के हितार्थ लिखते हैं ॥६१॥

विश्वभेषजचूर्ण

विश्वभेषजं हिंगु टंकणमागधीच-
सौवर्चलंत्विदं शिग्रुपादजैर्भावितैर
सैः मूलनाशनंक्षुत्वबोधनम्॥६२॥

अर्थ- सोंठ हींग सुहागा पीपल सेंधानोन इनसबको
सहजनेकी रसकी भावनादेकर अनुमान माफिक भक्षण करै
तो मंदाग्नि और मूल को नाशकरै ॥६२॥

हरीतक्यादिवटी

हरीतकीहरितुल्यषड्गुणाचतुर्गुणा
चतुरविशालपिप्पली चित्रकंवरदव-
रैकसैंधवंरसापनंकुरुनृप वटिवन्हि

दीपनी॥६३॥

अर्थ- छोटी हरड़ ६भाग पीपल गजपीपलए ४भाग चित्रक
१भाग सैंधानोन १भाग इनसबको मिलाय कूटकर नीबूके
रसमें गोली बनावै यहरसायनहै सबरोगोंको दूर करै॥

तक्रहरीतकी

तक्रेसुसंस्वेद्य शिवाशतानितहीज
मुद्धृत्यचकोशलेन षड्घणांश्चप
दूनिहिंगुक्षारवजाजीमजमोदकंच
६४षड्घणादेस्त्रिवृदर्धभागंगणो
प्रदेयंपेटगालितस्य विभाजचुक्रे
सारजास्यमीषांक्षिपेच्छिवांबीजनि
कास्यगर्भे ६४ समूत्यघर्मेषु विशो
ष्यतासांहरीतकी मन्यतमांनेये
वेत् अजीर्णमंदानलजाठरामया
न्समूलशलंग्रहणीगुदांकुरान् ६६
विबंधमानाहरुजोजयत्यसौसआ
मवातावमृताहरीतकी ॥६७॥

अर्थ- बड़ीहरड़ १०० ले उनको छाछ में औंटा १ पीछे उन-
की गुठली निकालिये औषधभरे पीपर पीपरामूल चव
चित्रकसोंठ मिरच काली दालचीनी सैंधानोन साझरमो
न कालानोन खारीनोन कचियानोन हींग जवाखार सज्जीखार

जीरा अजमोद येपत्येक १तोला लेय और निसोत आधे तो
ला इनसबको कूटपीस वस्त्रमें छान इसमें चूकाकी भावना
देकर पूर्वोक्त हरडों में भरेपीछे इनहरडोंको घामेमें सुखाय
कर धरराखे इसमें सें १हरड़खायतो इतनेरोगदूरहोंय अजी
र्ण मंदाग्नि उदरकेरोग शूल संग्रहणी बवासीर बंधकोष्ठ
अफरा और आमवात इनसबकानाशकरै दूसरो अमृतहरी
तकी कहतेहैं ॥६७॥

वैश्वानरक्षार ॥

सुत्यर्कचिचकैरंडलवणंसपुनर्न-
वंतिलापामार्गकदलीपलाशाति
तिणीतपा दष्ट गृहीत्वाज्वालयेदेत
त्स्थंभस्मा रिवलेंचतत् जलाढके
विपक्वमंपावस्तादावशेषितः ६८
सुप्रसन्नविनिःआक्षलवणंप्रस्थ
संयुतं पक्वनिर्धूमकठिणासूक्ष्म-
चूर्णीकृतंपुनः ७० यवानीजीरक
व्योषस्थूलजीरकहिंगुभिः प्रथग
र्द्धपलैरेभिश्चूर्णितैस्तंविमिश्रयेत
७१ आर्द्रकस्वरसेनापिभावयेच्छोष
येत्पुनः शीतोदकेनतच्चूर्णंपिबेत्पात
र्हिमाद्यया ७२ तस्मिन्जीर्णेऽन्नम

श्रीयाद्यूयैर्जांगलजैरसैः ईषदम्लैः
सलवणैः सुखोष्णैर्वह्निदीपनैः ७३
एतेनाग्निप्रवर्द्धेतबलमारोग्यमे
वच तत्रानुपानंशस्तंहितकंवाभो
जनेहितं ७४ मंदाग्न्यर्शोविकारेषु
वातश्लेष्मामयेषुच सर्वांगशोथ
रोगेषुशूलगुल्मोदरेषुच ॥७५॥
आमार्शोशर्करापांतु विरामूत्रानिल
रोगिषु

अर्थ- थूहर, आक, चीता, अपई, नोन, सोन, तिल, ओंगा,
केला, ढाक, इमली, इन सबको भस्मकर इन्की भस्म २५६तो
ले लेय पीछे इसको ९०२४ तोले जलमें औंटावे - जब चौ-
थाहिस्सा बाकीरहै तब उसको उतार छानलें पीछे इसमें
६४ तोले नोन मिलायकर फेर औंटावें इसरीतिसें निर्धूम
कठोर ऐसा क्षार प्रगट होय उसक्षार को लेकर धारीकपीसे
पीछे इसमें यहऔषध और मिलावे अजमायन जीरा सोंठ
मिरच पीपर बड़ाजीरा हींग येपत्येक २तोले लेय इ
न्को मिलाय इसमें अदरक के रसकीभावना देकर सुखाय
कर धरराखे हैं इसमें सें प्रातःकालबलको माफिकरीतसज
लके साथ भक्षणकरै जबयहऔषधपचजाय तब बनके
जीवोंकेमांसकारस तथायूष थोड़ाखट्टापदार्थनोनकोमिला

य कुछ गरम कर और अग्निदीप्त करने वाले पदार्थ खा
को देय तो अग्निबल आरोग्यता इनकी वृद्धी होय इस
औषध खाने के पीछे छाछ पीवै अथवा यह औषध भो
जनके समय देनी उचित है मंदाग्नि बवासीर वात क
फ सर्व देहकी सूजन मूल गोला उदर के समस्त रोग आ
मवात मल मूत्र संबंधी रोग वादीके रोग इनको यह
वैश्वानर नाम खार दूर करता है ॥७५॥

{क्षारयोग}

द्वौ क्षारौ टंकणं सूतं लवंगं लवणा
त्रयं पिप्पली गंधकं शुंठी मरिचं प
लसंमितः ॥७६॥ कर्षमेकं विषं दत्वा
सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् अर्कदुग्ध
स्य दातव्या भावनाः सप्तवासरं ॥७७॥
अथ मूषा गजपुटे खांगशीतं समु
द्धरेत् तोलवंगमिरचं स्फटिकानां
पलं पलं ॥७८॥ सर्वं संमर्द्य सुदृढं दृ
ढभांडे निधापयत् सोयं गुंजाद्वयं
खादेद्भुक्तं द्रावयति क्षणात् ॥७९॥
पुनर्भोजनवांछा च जनयेत्यहरोप
रि आममांसं द्रावयति श्लेष्मरोग
तिकृंतनः ॥८०॥

अर्थ. सज्जीखार जवाखार सुहागा पारा लौंग तीनों नोन
पीपल गंधक आमलासार सुंठ सोंठ मिरच ये प्रत्येक चा
र २ तोले सिंगियाविष २ तोले इनसब का बारीक चूर्ण कर इ
स्में आक के दूधकी सात भावना देय पीछे इसको गजपुट में
धर कर फूंक दे जब शीतल होय तब इसमें लौंग काली मिरच
और फिटकरी इनके चार २ तोले चूर्ण कर इसमें मिलावें पीछे
इसको अच्छे पात्र में भर कर धर राखें रोगीको इसमें से २ रत्ती खा
नेको देय तो क्षणमात्र में भोजनको पचाय देय और पहर भर
में हीं दूसरे भोजन करने की इच्छा करै और आमवांमांसको द्र
र कर दे और कफके समस्त रोगोंको दूर करै ॥८०॥

{इतिक्षारयोग ॥ ॥}

भुक्ते पथ्या भुक्ते पथ्या भुक्ताऽभुक्ते
पथ्या पथ्या ॥ जीर्णे पथ्याऽजी
र्णे पथ्या जीर्णाऽजीर्णे पथ्या प
थ्या ॥८१॥

अर्थ. भोजन करनेके उपरांत हरड पथ्य है क्योंकि अन्नके
पाचन करने में भोजनके प्रथम भी हरड पथ्य है क्योंकि अ
ग्निको दीप्त करै है और भुक्ताभुक्त कहिये भोजनके उपरांत
वमन होजाय उसभी हरड पथ्य है क्योंकी वमनके सब दोष
नाश करता है और अन्न जीर्ण होनेसेभी हरड पथ्य है पक्वा
सयको शोधन करै है अजीर्णमें भी हरड पथ्य है क्योंकि दीप

नहोनेसैं तथाजीर्णाजीर्णी कहिये कुछन अन्न पचाहोकुछ नहीं पचाहो उसमें भी हरडपथ्यहै क्योंकि विग्धअन्नकोशी घ्र पाक करता हैं ॥८१॥

कणाद्यचूर्ण

कणासिंधुशिवावन्हिचूर्णउष्णेन
वारिणा पीतंप्रातःक्षुधांकुर्यात्सा
वकस्यापि दीपनम् ॥ ८२॥ ॥

अर्थ- पीपल-सैंधानोंन-हरड-आमरे-चित्रक-इनका चूर्ण प्रातःकालतत्ते जलसैं भक्षणकरैतो भूखको बढावै-
और जठराग्निकोदीप्तकरै ॥८२॥

जिरकादिचूर्ण

जरणाकचकशुंठीपिप्पलीतीक्ष्णवे
ल्लं सलवणमजमोदाहिंगुपथ्येति
कर्षं पृथगथपलमाचास्याचित्रकृ
ष्णामेषाजननमुदरवन्हेःपाचनंरो
चनंच ॥ ८३॥

अर्थ- जीरा-संचरनोन-सोंठ-पीपल-कालीमिरच-वायविडंग सैंधानोन-अजमोद-हींग-हरड-इनसब-औषधों को तोले तोले भरलेय सबकूटकर चूर्णबनायलेय यहचूर्ण उदरकी अग्निको बढावै पाचक और रोचकहै ॥८३॥

हिंगाष्टकचूर्ण

त्रिकटुकमजमोदासैंधवजीरकेद्वे
समचरणघृतानामष्टमोहिंगुभागः
प्रथमकवडभुक्तेसर्पिषाचूर्णमेत
ज्जनयतिजठराग्निंवातगुल्मंनि
हंति ॥ ८४॥

अर्थ- सोंठ-मिरच-पीपर-अजमोद-सैंधानोंन-दोनोजीरे इनसबको समानभाग लेकर चूर्णबनावै परंतु इसमें हींग घृतमेंभूनकर मिलावै इसहिंगाष्टकचूर्णको भोजनके समय प्रथमगरसामें घृतकेसाथमिलायकर खानेसैं अग्निकोबढावै और वायगोला को दूरकरै है ॥८॥

वन्हिनामकरस

जातीजातंत्रिकर्षंमरिचमपिप
लं चाधीकर्षमानं गंधंसतंल
वंगंविषमिदमखिलंचिंचणी-
सस्यतोये पिष्टामाषैकमात्रावि
तरतिदहनंवन्हिमाद्यंचसद्यो-
रोगानशूलानिलादीन्दहतिहु
तगुणोवन्हिनामारसोयं ॥ ८६॥

अर्थ: जावित्री तोला१॥ जायफल तोला१॥ मिरच तो-४ गंधक-पारा-लौंग-सिंगियाविष-सबएकएकधा तोला इनसबको बारीकपीसकर इसमें इमलीकेरसकीभावनादेकरउड

दके बराबर गोली बनावे इसमेंसे एक गोली अनुपानके संग प्रा
तःकाल अथवा सायंकाल खावतो मंदाग्निका नाश होय वा

{बृहच्छंखवटी ॥}

स्नुगर्कचिंतापामार्गरिंभातिलपत्रा
शजान् क्षारांश्चभिषगोदद्यात्प्रत्ये
कंपलमात्रया लवणानिपृथक्
पंचपात्यारिपलमात्रया सजि
काचयवक्षारं टंकणंचितयंपलं
सर्वंचयोदशपलंशस्मचूर्णंविधा
पयेत् निंबूफलरसेप्रस्थंसंमिते
तत्परिक्षिपेत् तत्रशंखस्यशक
लपलंवह्नौपताप्यतु वाराचिर्वा
पयेत्सर्वंद्रवतितद्यथा नागंचि
कलंगाल्यंमरीचंचपलद्वयं पीप्प
लीपलमानास्यात्पलार्धंभृष्टहिंगु
नः ग्रंथिकंचिचकंचापियवानी
जीरकंतथा जातीफलंलवंगंच
पृथक्कर्षद्वयोन्मितं रसगंधोवि
षंचापिटंकणंचमनःशिला एता
निकर्षमात्राणिसर्वंसंचूर्ण्यमिश्र
येत् शरावार्धेनचुक्रेणसम्पीयव

दिकाचरेत् मायप्रमाणाभावैर्द्वि
हच्छंखवटीस्मृता सर्वजीर्णप्रश
मनी सर्वशूलनिवारणी निश्चय
लसकादीनांसद्योभवाप्तेनाशनी

अर्थ- पहर-आम-इमली-ओगा-कला-तिल-ढाक-इन
सब क्षारोंको चार२ तोले लेय-सांभर नोन-कचियानोन-
काला नोन-सेंधानोन-समुद्रनोन-पंचार तोले लेय-सज्जी
खार-जवाखार-सुहागा-यह सब ५२ वा वन तोले लेय-सब
को कूटपीसकर चूर्णकर ६४ तोले नीबूके रसमें भावना देय
पीछे चार ४ तोले शंखके टुकडे लेय उन्हे आंचमें तपाय२
के गौमूत्रमें बुझावे ऐसें सातवार बारनेसें संखकी भस्महो
जायतदनंतर सोंठ १२ तोले-मिरच ८ तोले-पीपल ४ तोले
भुजीहींग २ तोले-पीपलामूल-चित्रक-अजमायन-जीरा
जायफल-लौंग यह प्रत्येक दोदो तोले लेय-पारा-गंधक
सिंगिया-विषसुहागा-मैनसिल-येसब औषध एक२ तोले
लेय-इनसबको इकट्ठीकर १६ तोले चूआ के रसमें मि
लायकर गोलीबनावे इसमेंसे एक माशे नित्यखाय तो अजी
र्ण-शूल-हेजा-अलसक-इन्को तत्काल नाशकरे इसको
बृहत संखवटी कहतेहैं ॥

अग्निकुमाररस

पारदंशुद्धगंधंचविषंचेतिभिःसमं

कपर्दविषतुल्यांशं तत्तुल्यं स्वर्जि
काकणा ॥१॥ शुंठीचाष्टगुणायुक्ता
मरिचं मेलयद्दुधः मर्दयित्वाख
लेकृत्वा पावत्सौकज्जलप्रभा ॥२॥
जंबीरनीरैर्देयाच्च भावनासप्तवैत
तः आर्द्रकस्यरसेनैव ततः सिद्धं हि
गुंजकं ॥३॥ रसश्चाग्निकुमारोयं आ
मसंचयजांरुजं अग्निमांद्यमजीर्णं
चनाशयेत्कफहृत्परः ॥४॥ ॥

अर्थ- पारा· गंधक· सिंगियाविष· सहसव बराबरलेय· कोड़ीकी भस्मतीनभागलेय· सज्जीखार· सुहागा· पीपल· ये १भाग ले· सोंठ ८ भागलेय· मिरच ८ भाग· इन्को खरलमें व हुत बारीककर नीबूकेरसकी सातभावनादेय· पीछे इसमेंसे दोरत्ती मनुष्य खायतो यहअग्निकुमार रसआमकेसमूहको नाशकरे मंदाग्नि· और अजीर्णको दूरकरे तथा कफको हरैहै ॥४॥

अग्निदीपनी गोली

गंधकं मरिचं शुंठीसैंधवंयवजं
तवं निंबूरसेन वटिकचणमात्रा
ग्निदीपनी ॥

अर्थ- गंधक· काली मिरच· सोंठ· सैंधानोंन· इन्द्रजो· वाय

विड़ंग· इन्केचूर्णको नीबूकेरससें चनावरावरगोली बना
वें इसगोलीके खानेसें अग्निदीप्तहो अजीर्णनाश होय ॥

महोदधिगोली

एकैकं विषसूतंचजातिटंकद्विकं
द्विकं कृष्णात्रिकं विश्वषट्कंदग्ध
स्याच्चकपर्दिका देवपुष्पंवाणामि
तसर्वंसंमर्द्ययत्नतः महोदधिव
टीनाम नष्टमग्निंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ- सुद्ध सिंगियाविष· १भाग· पारा १ भाग· जायफल २भाग· सुहागा २भाग· पीपल ३भाग· सोंठ ६भाग· कोड़ीकीभस्म ६भाग· लोंग ४भाग· इनसबकाचूर्णकरे इसकोमहोदधिवटीकहतेहैं यहअग्निको बढ़ातीहै ॥

चित्रकादिचूर्ण

चित्रकोनागरंहिंगुपिप्पलीमूल
पीप्पली चव्याजमोदमरिचंप्रत्ये
कंकर्षसंमितं स्वर्जिकाचयवक्षा
रःसिंधुसौवर्चलंविडं सामुद्रिकं
रोमकंचकोलमात्रांशिकारयेत् ॥
एकीकृत्वाखिलंचूर्णंभावयेन्मा
तुलंगजैः रसैर्वादाडिमैर्वापिशो
षयेदातपेनवा तच्चूर्णंनाशयेद्ग

ल्पंग्रहणीमामजंरुजंअग्निंचकु
रुतेदीप्तिरुचिकृत्कफ़नाशनं ॥ ॥

अर्थ- चीता· सोंठ· हींग· पीपरिमूल· वच· अजमोद· मिरच सब कर्ष २ भरलेना· दोनोंखार· सेंधानोंन· कालानोंन· समुद्रनोन· सांभरनोंन· कचियानोंन· ये कोल कोल ले चूर्णकरि विजोरा के रसमें भावनादेकर घाममें सुखायलेय· यह चूर्ण गुल्म ग्रहणी आमरोग हरैअग्निदीप्तकरै रुचिकरै कफ़नाश

॥ करै ॥

नवगुणानवचन्द्रवत्सरेपौषेशु
क्लदलेऽग्निसतिथौ सुरगुरु·
सुवासरे वरेषाप्तापूर्णा मजीर्णीमं
॥ जरी ॥

इति अजीर्णी मंजरी ॥
समाप्तः
शुभं
हस्ताक्षर पण्डितकेशव
देव शर्म्मा
इति

MYSORE : BOUND
BY
M. VENKETRAMANAYYA